वीर स्वामीभक्त मां पन्नाधाय गुर्जरी

जगदीश गुर्जर,
चिताम्बा, माण्डल,
जिला–भीलवाडा, राज.
(मो.)8107398310

आदरणीय भाईयों और बहनों–

आप सभी को ''राष्ट्रीय महिला दिवस'' एवं ''अन्तर्राष्ट्रीय गुर्जर दिवस'' की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारतीय नारियां अनादि काल से ही अपनी विद्या, बुद्धि, कला, कुशलता, कर्मठता तथा सहिष्णुता के आधार पर मानव जीवन और जगत को अधिकाधिक सुखमय बनाने का सफल प्रयास करती है। साथ ही अपने त्याग, तपस्या तथा शौर्य, उदारता, यकित, वात्सल्य, जन्मभूमि प्रेम तथा अध्यात्म चिंतन से सुधी समाज के सम्मुख उच्चादर्श भी प्रस्तुत करती आ रही है। इनके कीर्ति कलाप से आज भी समस्त भारतीय वाडमय सुरक्षित है। हमारे पूर्वजों ने नारी को सदा पूजनीया माना है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'' कहकर उन्होंनें नारी जाति का श्रद्धापूर्वक सम्मान किया है। स्वंम गृहस्थ जीवन के केन्द्र में स्थिर रहकर भारतीय नारी ने बड़े–बड़ो की सेवा की, नन्हे–मुन्नों को पाला पोसा और पति के कंधे से कंधा मिलाकर पारिवारिक दायित्व का निर्वहन किया। एक विस्तृत उदयान में खिले सैकड़ों रूप रंग गंधो के हजार–हजार सुमनों की भांति की सन्नारियों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति में विपुल वैविध्य का विधान किया हैं, उनके प्रत्येक पक्ष को समृद्ध किया है। अनादिकला से लेकर अब तक भारतीय नारियों ने अपना इतिहास स्वर्ण अक्षरों में अंकित कर दिया, जिनमें भगिनी निवेदिता, मदर टेरेसा, जीजाबाई, तैमूरलंग से लड़ने वाली रामप्यारी गुर्जर, अहिल्या बाई, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई आदि इन सब के साथ में एक और नाम आता है ''भक्त शिरोमणि मां पन्नाधाय गुर्जरी'' मां पन्नाधाय गुर्जरी को कौन नहीं जानता? भला हर एक बच्चा–बच्चा तक जानता है। पन्नाधाय चित्तौडगढ़ की स्वामीभक्त सेविका थी। वह उदय सिंह की देखभाल करती थी। जब महाराणा संग्रामसिंह की मृत्यु के बाद बनवीर ने षड़यंत्र रचकर उदयसिंह को मारने का प्रयास किया तो पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन सिंह गुर्जर की बलि देकर भी उदयसिंह की रक्षा की। हालांकि मां पन्नाधाय की कोई मजबूरी नहीं थी। वह चाहती तो अपने पुत्र चन्दन सिंह गुर्जर को बचाने के लिए उदय सिंह को मारने दे सकती थी, लेकिन मां पन्नाधाय ने स्वेच्छा से अपने पुत्र का बलिदान कर अपने त्याग बलिदान की मिसाल कायम की। वीर क्षेत्राणी मां पन्नाधाय गुर्जरी कोई रानी नहीं थी, ना हि कोई बेगम थी, वह एक धाय मां थी बस

और जो कुछ उसने अपने राज्य के लिए, अपने स्वामी के लिए, अपने स्वाभिमान के लिए किया वैसा संभवतः आज तक दुनिया में कोई नहीं कर पाया।

''राष्ट्रधर्म पर किया, प्यारा पुत्र बलिदान''

''ममता से उपर था, मातृभूमि का स्वाभिमान''

वीर शिरोमणि मां पन्नाधाय गुर्जरी के सामने कई संकट आये पर भी अपना धर्म, धैर्य तथा सत्य का साथ नहीं छोड़ा। महान बलिदान गुर्जराणी मां पन्नाधाय को याद करो, जिनका खून से भी कीमती दूध राणा उदय सिंह ने बचपन में पीकर मात्र 18 वर्ष की आयु में आततायी बनवीर का वध करके सिद्ध कर दिया कि गुर्जरी माता का दूध भी शेरनी से कम नहीं होता है और फिर उन्हीं के अंश से जन्मे महाराणा प्रताप सिंह को कौन नहीं जानता।

''एक नारी की जिंदगी वत्सल्ता का इतिहास है'

"A Woman's life is a history of the affection"

गुर्जर कौम के लिए बहादुर गुर्जरी माताओं का दूध खून से कीमती है, नाजुक वक्त आने पर वह घरों की चार दीवारी को गिराती हुई किसी के लिए आखिरी किला बन जाती है। वीर गुर्जरियों की महता और गुर्जरों की महिमा की प्रमाणिकता का तथ्यों से सबूत मिलता है।

बम्बई गजेटियर लिखता है– हम अक्सर शेर के समान दहाड़ने वाले गुर्जरों का प्राचीन लेखों में वर्णन पाते है कि गुर्जरी का दूध व नाहरी (शेरनी) का दूध एक समान होता है।

We often find in inscriptions the Roaring Gurjar and there is a proverb that Gurjari ka Dudha Nahari ka Dudha (Gurjar's milk tigers milk.)

राजस्थान के इतिहास की महान स्त्री वीर स्वामीभक्त मां पन्नाधाय गुर्जरी चित्तौड़गढ़ के इतिहास में जहां पद्मिनी के जौहर की अमरगाथाएं मीरा के भक्तिपूर्ण गीत गुंजते है, वहीं वीर क्षेत्राणी गुर्जरी मां पन्नाधाय जैसी मामूली स्त्री की स्वामीभक्ति की कहानी इतिहास में किसी से कम नहीं।

''मौत की मंडियों मे जा जाकर, हमने अपने बेटो और बेटियों की बलियां दी है,

देश ने जब भी एक सर मांगा, हमने भर–भर के झोलियां दी है।''

****